विशिष्ट आयोजन

अखिल भारतीय साहित्य परिषद् द्वारा अनिवार्य तीन कार्यक्रम, कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण, साहित्यकार प्रशिक्षण वर्ग, सम्मान समारोहों के अतिरिक्त कालक्रम में जो विशेष अवसर उपस्थित होते हैं, उस समय साहित्यिक दृष्टिकोण के साथ उन आयोजनों को भी समारोह पूर्वक किया जाता है। ऐसे उल्लेखनीय विशिष्ट आयोजन निम्नानुसार हैं :–

एक लिपि नागरी :

सन् 1968 में 'सभी भाषाओं की एक लिपि नागरी' विषय पर देश भर के लिपि विशेषज्ञों का सम्मेलन करना निश्चित किया। महामंत्री श्री रत्नसिंह शाण्डिल्य ने सम्मेलन के संयोजन का दायित्व दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रमानाथ त्रिपाठी को दिया। उन्होंने देश भर के लिपि विशेषज्ञों को पत्र लिख कर शोध आलेख भेजने और सम्मेलन में सहभागी होने का आग्रह किया। परिषद् की प्रारंभिक अवस्था में थी और धन की भी व्यवस्था नहीं थी। अतः अधिकांश विद्वान स्वयं ही किराया खर्च पर उपस्थित रहे। दो दिवसीय सम्मेलन में सार्थक चर्चा हुई।

1857 स्वतंत्रता संग्राम सार्द्ध शती

1857 के स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् भारत को स्वतंत्रत करने के प्रयासों में तेजी आयी थी। वर्ष 2007 में उस स्वतंत्रता संग्राम की 150वीं जयन्ती के निमित्त देश भर में आयोजन किये जा रहे थे। अखिल भारतीय साहित्य परिषद् ने भी इस अवसर पर देश भर में आयोजन की योजना की थी। 1857–सार्द्ध शती विषय पर देश भर में परिषद् की ओर से परिचर्चाएं आयोजित की गयीं। 1857 से 1946 तक के स्वतंत्रता संघर्ष की जानकारी लोगों तक पहुंचाने के लिये एक पुस्तक '1857–स्वतंत्रता संग्राम के प्रतिसाद' तैयार कर न्यूनतम मूल्य पर वितरित की गयीं। 1857 पर अन्य साहित्य तो है ही पर लोक–साहित्य और लोक–कथाओं में भी 1857 को गुंथा गया था। उसे संग्रहित करने के उद्देश्य से 'साहित्य परिक्रमा' के दो अंक विशेषांक के रूप में प्रकाशित किये गये। इन विशेषाकों को पाठकों की प्रशंसा व सराहना मिली।

स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जयन्ती

स्वामी विवेकानन्द ने शताब्दियों से पराधीन भारत के मानस को झकझोर कर स्वाभिमान से खड़े होने का साहस निर्माण किया था। भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व स्वामी विवेकानन्द के प्रति श्रद्धा रखता है। ऐसे स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जयन्ती के निमित्त उन्हें स्मरण करने और उनका संदेश जन–जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से वर्ष 2013 में कार्यक्रम आयोजित किये गये। स्वामीजी के जीवन पर 100 प्रश्नों की प्रश्नावली बना कर विद्यालयीन और महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की प्रतियोगिता सक्रिय इकाइयों द्वारा की गयीं ताकि नई पीढ़ी को स्वामी विवेकानन्द के जीवन और उनके द्वारा किये गये कार्य से परिचित कराया जा सके।

स्वामी विवेकानन्द और साहित्य विषय पर देश भर में व्याख्यान आयोजित कर स्वामी विवेकानन्द का संदेश लोगों तक पहुँचाया गया।

स्वामी विवेकानन्द के विचारों का संसार के विचारकों पर प्रभाव हुआ है। साहित्य भी उससे अछूता नहीं रहा। भारतीय भाषाओं के साहित्य पर विवेकानन्द के विचारों का क्या परिणाम हुआ, इस विषय को लेकर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रत्येक भाषा के साहित्य पर हुए प्रभाव पर तैयार शोध आलेख संगोष्ठी में प्रस्तुत किये गये। इन शोध आलेखों को 'इंगित' विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया। यह संगोष्ठी ग्वालियर में जीवाजी विश्वविद्यालय के सहयोग से संपन्न हुई। उल्लेखनीय है कि लोकसभा के सदस्य, प्रखर वक्ता, युवाओं के आदर्श ख्यातनाम क्रिकेट खिलाड़ी श्री कीर्ति आजाद संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके प्रेरक उद्‌बोधन ने साहित्यकारों में विशेष उत्साह का संचार किया।

गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती

सिख गुरुओं का जीवन सबके लिये प्रेरणादायी रहा है। उसमें भी गुरु गोविन्दसिंह जी का जाज्ज्वल्यमान जीवन जिन्होंने स्वयं को ही नहीं अपितु अपने पिता और चारों पुत्रों को भी राष्ट्रवेदी पर बलिदान कर दिया था। 1974 में राष्ट्रपति भवन में गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती भारतीय साहित्य परिषद् (अब अखिल भारतीय साहित्य परिषद्) के तत्वावधान में मनायी गयी। हुआ यह की श्री परमानन्द पांचाल राष्ट्रपति भवन में हिन्दी अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे थे। उनसे सम्पर्क कर परिषद् की राष्ट्रपति भवन में कार्यक्रम करने का विचार प्रकट किया। उनके प्रयास को सफलता मिली और गुरु गोविन्दसिंह जी की जयन्ती के दिन राष्ट्रपति भवन में आयोजन संभव हो सका। साहित्य परिषद् के कार्यकर्ता तथा अन्य बुद्धिजीवियों से खचाखच भरे सभा कक्ष में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। स्वयं राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह की उपस्थिति से आयोजन का विशेष रूप से महत्त्व का रहा। गुरु गोविन्दसिंह जी के जीवन पर राष्ट्रपति महोदय का उद्‌बोधक भाषण सुन सब अभिभूत हुए।

उस समय की एक घटना उल्लेखनीय है। परिषद् के महामंत्री जीतसिंह जीत इस उद्देश्य से गुरु गोविन्दसिंह जी के चित्र के सम्मुख खड़े थे की राष्ट्रपति जी के आने पर चित्र पर माल्यार्पण करने हेतु उन्हें देंगे। राष्ट्रपति जी पधारे। वे चित्र के सम्मुख आये और प्रणाम किया। जीतसिंह जीत जी ने उनकी ओर माला बढ़ायी। राष्ट्रपति जी ने उनकी ओर देखते हुए कहा आप तो जानते हैं सिखों में चित्र पर माला नहीं चढ़ाते हैं। जीतसिंह जी को हतप्रभ देख कर राष्ट्रपति जी ने माला उनके हाथ से ली और चित्र पर चढ़ा दी। बाद में राष्ट्रपति जी ने गुरु गोविन्दसिंह जी के जीवन पर प्रेरक उद्‌बोधन दिया। राष्ट्रपति जी कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुए।

इसके अतिरिक्त गुरु गोविन्दसिंह जी के प्रेरक जीवन और अमर बलिदान पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रकाशित कर साहित्यकारों और विद्यार्थियों में वितरित की गयी ताकि इतिहास के एक उज्ज्वल पक्ष को सबके सामाने लाया जा सके।

संविधान की षष्ठी पूर्ति

अपने देश में संविधान और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का नाम गाहे–बगाहे लिया जाता है। ऐसा करते समय नाम लेने वालों के मन में न तो संविधान के प्रति निष्ठा व श्रद्धा होती है और न ही अभिव्यक्ति की पवित्रता का सम्मान। इसका उपयोग सदैव दूसरे को गरियाने के लिये ही किया जाता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर इतिहास, संस्कृति, परम्पराओं को हीन बताने तथा महापुरुषों के अस्तित्व और चरित्र पर ऊँगली उठाई गयी है। विरोधियों की आवाज दबाने के लिये भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जुमले का दुरूपयोग किया जाता रहा है।

परिषद् साहित्यिक आयोजनों के साथ–साथ सामयिक विषयों पर चर्चा के कार्यक्रम भी करती है। वर्ष 2012 में भारतीय संविधान के साठ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर संविधान और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता विषय पर देश भर में कार्यक्रम किये गये। इन कार्यक्रमों के माध्यम से सबको बताया गया कि अपने देश में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को अनर्थ के रूप में लिया गया है। इसकी आड़ में भारत को विखण्डित करने का प्रयास किया जा रहा है। इस निमित्त संविधान और अभिव्यक्ति का अधिकार विषय पर ख्यातनाम साहित्यकारों और विधि विशेषज्ञों के आलेखों से युक्त पुस्तिका प्रकाशित की गयी और साहित्यकारों तथा बुद्धिजीवियों में वितरित की गयी। देश में कतिपय प्रमुख स्थानों पर 'संविधान में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार और साहित्य' विषय पर व्याख्यान आयोजित किये गये।

मुंशी प्रेमचन्द कथा समारोहः 25–26 फरवरी 2012 को उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द की स्मृति में ग्वालियर में कथा समारोह आयोजित किया गया जिसमें देश भर से ख्यातनाम कथाकारों को आमंत्रित किया गया था। यह समारोह अखिल भारतीय साहित्य परिषद् ने प्रेमचन्द सृजन पीठ उज्जैन के साथ संयुक्त तत्वावधान में किया गया। परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. यतीन्द्र गोस्वामी तथा प्रेमचन्द सृजन पीठ के अध्यक्ष श्री जगदीश तोमर के मार्गदर्शन में कथा समारोह संपन्न हुआ।

उपन्यासकार श्रीमती क्षमा कौल जम्मू, संपादक साहित्य परिक्रमा श्रीमती क्रान्ति कनाटे बड़ोदरा, समीक्षक डॉ. अवधेश चन्सौलिया, समीक्षक डॉ. बी. अशोक कालीकट, बाल कथाकार एवं संपादक बाल पत्रिका 'देवपुत्र' डॉ. विकास दवे इन्दौर, कथाकार सुनीता पाठक ग्वालियर, अनुवादक डॉ. देवेन्द्रचन्द्र दास गुवाहाटी, हरियाण साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ.श्यामसखा श्याम, मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक प्रो.त्रिभुवननाथ शुक्ल की सहभागिता उल्लेखनीय रही।

प्रेमचन्द्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोध आलेखों की प्रस्तुति पश्चात् आमंत्रित कथाकारों ने अपनी–अपनी कथाओं का वाचन किया। प्रेमचन्द सृजन पीठ ने इस अवसर पर एक विशेषांक भी प्रकाशित किया जिसका लोकार्पण मंचस्थ अतिथियों ने किया।

समविचारी साहित्यिक संस्थाओं का सम्मिलन : साहित्य के क्षेत्र में अखिल भारतीय साहित्य परिषद् की तरह ही कार्य करने वाली अनेक साहित्यिक संस्थाएं स्थानीय स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक कार्य करती हैं। ऐसी संस्थाओं से सम्पर्क व परिचय कर उनके साथ संयुक्त रूप से कार्य की योजना बना कर कार्य करने पर कार्य अधिक गति से होना निश्चित है। इस दृष्टि से अखिल भारतीय साहित्य परिषद् ने कदम बढ़ाने का विचार किया है। प्रयोग और उदाहरण के तौर पर इसकी शुरूआत लखनऊ महानगर से की गई। लखनऊ में शताधिक साहित्यिक संस्थाएं सक्रिय हैं। इन संस्थाओं के पदाधिकारियों के साथ एक बैठक करने की दृष्टि से 78 साहित्यिक संस्थाओं से सम्पर्क किया गया। इनमें से 56 संस्थाओं के पदाधिकारी बैठक में उपस्थित रहे। उपस्थित पदाधिकारियों को अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के कार्य और व्याप के बारे में विस्तार से बताया गया। साथ ही परिषद् का परिचयात्मक साहित्य भी वितरित किया। साहित्य के क्षेत्र में मिल कर कार्य करने बारे में उन पदाधिकारियों से चर्चा हुई। सबने बैठक के आयोजन की सराहना की और मिल कर कार्य करने पर प्रसन्नता प्रकट की।

उक्त बैठक के पश्चात् लखनऊ में परिषद् के जितने भी बड़े कार्यक्रम हुए उनकी सूचना उन लोगों को दी गयीं। प्रसन्नता की बात यह है कि ऐसी संस्थाओं की सक्रिय सहभागिता परिषद् के कार्यक्रमों में रही। वे लोग भी अपने आयोजनों की सूचना देने लगे हैं।

साहित्यकार स्मरण : 1996 में महाप्राण पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला एवं राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की जन्म शताब्दी; वर्ष 2007 में छायावादी कवयित्रि महादेवी वर्मा, वर्ष 2011 में संतश्रेष्ठ तुलसीदास जी की पंचशती; 2017 में पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी के निमित्त उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर देश भर में चर्चा के कार्यक्रम किये गये।

व्याख्यान माला : परिषद् के स्वर्ण जयन्ती वर्ष से एक नया प्रक्रम शुरू किया गया है। प्रतिवर्ष एक विषय विशेष लेकर देश भर में व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। इस योजना का उद्देश्य का एक विषय के बारे में परिषद् का दृष्टिकोण स्पष्ट करना, विषय को अधिकृत रूप से सबके सामने रखना, नये लोगों से सम्पर्क कर परिषद् से जोड़ना, चुने हुए शहरों में परिषद् के काम को बढ़ाना है। व्याख्यान माला योजना के अन्तर्गत देश भर में कुछ प्रमुख स्थान चुने जाते हैं और उन स्थानों पर परिषद् द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया जाता है। इन आयोजनों में परिषद् के सदस्यों, के अतिरिक्त अन्य साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों को विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता है। केन्द्र की ओर से व्याख्यान देने वाला पदाधिकारी भेजा जाता है। कार्यक्रम की व्यवस्था स्थानीय इकाई करती है।

इस योजना के अन्तर्गत वर्ष 2018 में 'साहित्य का सामर्थ्य' विषय पर 80 शहरों में व्याख्यान हुए और वर्ष 2019 में 'हमारी साहित्य परम्परा' विषय पर 115 शहरों में व्याख्यान के कार्यक्रम हुए। इससे प्रेरणा लेकर प्रदेश इकाइयों ने भी चुनिन्दा शहरों में व्याख्यान के कार्यक्रम किये। जिनकी संख्या 350 के लगभग रही।

लोकार्पण आयोजन : परिषद् द्वारा प्रकाशित साहित्य और उसके साहित्यकारों द्वारा लिखी पुस्तकों के लोकार्पण कार्यक्रम तो किये ही जाते हैं, परन्तु राष्ट्रीय महत्त्व के श्रेष्ठ साहित्य के प्रचार–प्रसार के लिये भी लोकार्पण के कार्यक्रम परिषद् द्वारा किये जाते हैं। इस दृष्टि से 'डॉ. धर्मपाल समग्र' और 'श्री गुरुजी समग्र' के लोकार्पण कार्यक्रम दिल्ली सहित प्रमुख शहरों में किये गये।

परिषद् ने साहित्य परिक्रमा का बुन्देलखण्ड विशेषांक प्रकाशित किया उसके लोकार्पण कार्यक्रम संपूर्ण उत्तरप्रदेश में किये। बुन्देलखण्ड के सभी प्रमुख शहरों व छोटे स्थानों को मिलाकर 52 स्थानों पर लोकार्पण कार्यक्रम हुए।

विश्व पुस्तक मेला : दिल्ली में विश्व पुस्तक मेले का आयोजन होता है। उस अवसर पर हर बार परिषद् द्वारा विषय विशेष पर गोष्ठी का आयोजन, परिषद् के साहित्यकारों की पुस्तकों का लोकार्पण किया जाता है तथा प्रमुख साहित्यकारों को सम्मानित किया जाता है।

कोरोना काल : वैश्विक महामारी कोरोना ने मनुष्य का जीवन अस्तव्यस्त कर दिया। समस्त सामान्य गतिविधियां बाधित हुईं। मनुष्य अपने ही घर में कैद होकर रह गया। प्रत्येक बात के दो पक्ष होते हैं। कोरोना काल अनेक कठिनाइयों, समस्याओं, असुविधाओं का सामना करना पड़ा, पर साथ–साथ मनुष्य को आत्मचिंतन करने का अवसर मिला, जीवन की भाग–दौड़ में जो छूट गया था उसे जानने का सुयोग मिला, परिवार के साथ पुनर्मिलन हुआ, प्रकृति की महत्ता सुनी थी अब अनुभव में आयी, रचनात्मकता की ओर पग बढ़े, सामाजिक उत्तरदायित्व में सहभाग बढ़ा। अपनी विस्मृत संस्कृति की महत्ता व उपयोगिता मालूम हुई।

कोरोना के कारण घोषित गृहवास के परिणामस्वरूप प्रत्यक्ष सांगठनिक गतिविधियां अवरूद्ध हो गयी। दायित्ववान अधिकारी व जिम्मेदार कार्यकर्त्ताओं ने उत्पन्न संकट से मार्ग निकाला और

अंतरताने तथा दूरभाष के माध्यम से सांगठनिक गतिविधियों को शुरू किया और देश भर में कार्यक्रमों की झड़ी लगा दी। संगोष्ठियों, प्रबोधन वर्गों, प्रतियोगिताओं, पुस्तक विमर्श के आयोजन निरन्तर हुए। नये साहित्यकार परिषद् से जुड़े, जाने–माने साहित्यकारों ने परिषद् के मंच से अपनी बात कही। 409 कार्यक्रमों में 4,58,215 लोगों ने सहभागिता की जिसमें 202 नये और परिषद् के 885 वक्ताओं ने अपनी बात रखी।

स्वर्ण जयन्ती वर्ष समारोह
(2016–2017)

आश्विन शुक्ल द्वादशी विक्रमी संवत् 2023, तद्नुसार 27 अक्टूबर 1966 को दिल्ली में 'भारतीय साहित्य परिषद्' के नाम से कार्य का श्रीगणेश हुआ था और कानूनी कारणों से बाद में उसका नाम 'अखिल भारतीय परिषद्' हुआ। वर्तमान में इसी नाम से कार्य चल रहा है। तमाम उतार–चढ़ावों का अनुभव करते हुए परिषद् ने 50 वर्ष पूर्ण किये। इसलिये वर्ष 2016–2017 को स्वर्ण जयन्ती वर्ष के रूप में मनाने का निश्चय किया गया और कार्यवृद्धि तथा सुदृढ़िकरण के निमित्त विभिन्न प्रकार के आयोजन करने का निश्चय किया गया। इसकी शुरूआत दिल्ली में स्वर्ण जयन्ती वर्ष उद्घाटन समारोह के साथ हुई और समापन लखनऊ में समारोप कार्यक्रम के साथ हुआ।

उद्घाटन समारोह : अखिल भारतीय साहित्य परिषद् की स्वर्ण–जयंती समारोह वर्ष के शुभारम्भ के शुभअवसर पर दिल्ली में उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में उन कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया जिनके अथक परिश्रम व प्रयासों से परिषद् ने चहुँमुखी प्रगति व विस्तार किया है। परिषद् को बीज से सुदृढ़ विशाल वटवृक्ष का रूप देने में नींव के आधारभूत कार्यकर्ताओं का अतुलनीय योगदान रहा है। इस अवसर पर ऐसे समर्पित, तेजस्वी, निष्ठावान कार्यकर्ताओं का सम्मान करना हम सबका दायित्व था।

दिल्ली के 'सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र के भव्य सभा भवन में हरियाणा व पंजाब के महामहिम राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर परिषद् की पत्रिका 'साहित्य परिक्रमा' के कथा विशे ाांक तथा चित्रकूट में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के केन्द्रीय विषय 'राम वनगमन की साहित्यिक निष्पत्ति' पर प्राप्त शोध आलेखों का संग्रह अतिथियों ने लोकार्पित किया। स्वर्ण जयन्ती आयोजनों के निमित्त परिषद् का विशे ा प्रतीक चिन्ह तैयार किया गया था, उसका अनावरण भी किया गया।

इसके पश्चात् परिषद् से प्रारंभ से जुड़े अर्थात् नींव के पत्थर रहे तथा कठिन परिस्थितियों में जिन्होंने अपने सामर्थ्य व पौरुष से परिषद् के कार्य को ऊँचाइयाँ प्रदान की, ऐसे – 1. श्री बलवीर सिंह करूण अजमेर, 2. डॉ. देवेन्द्र दीपक भोपाल, 3. श्री जीत सिंह जीत दिल्ली, 4. डॉ. कन्हैया सिंह आजमगढ़, 5. डॉ. भुवनेश्वर गुरूमैता सुपौल बिहार, 6. डॉ. ज्वाला प्रसाद कौशिक मेरठ और 7. डॉ. देवेन्द्रचन्द्र दास असम को शााल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिन्ह भेंट कर राज्यपाल महोदय ने सम्मानित किया। इनके अलावा 8. डॉ. दयाकृष्ण विजय कोटा, 9. डॉ. मथुरेशनन्दन कुलश्रेष्ठ जयपुर, 10. डॉ. रमानाथ त्रिपाठी दिल्ली, 11. डॉ. योगेन्द्र गोस्वामी दिल्ली और 12. माननीय सूर्यकृष्ण जी दिल्ली को सम्मानित किया जाना था, परंतु अस्वस्थता के कारण समारोह में उपस्थित नहीं रह सके।

अन्य आयोजन : परिषद् की स्वर्ण जयन्ती के निमित्त वर्ष भर आयोजनों के माध्यम से कार्य को विस्तार देने व सुदृढ़ीकरण के निमित्त देश भर में 'हमारा साहित्यिक दृष्टिकोण' और 'साहित्य परिषद् का कार्य' विषय पर व्याख्यान माला की गयी। इसका उद्देश्य प्रत्येक प्रमुख शहर तथा सक्रिय इकाई तक परिषद् के कार्य की विस्तृत जानकारी और परिषद् का साहित्यिक दृष्टिकोण पहुँचाना था। इन व्याख्यानों के साथ उस स्थान के परिषद् के नींव के पत्थर रूपी कार्यकर्ताओं का सम्मान भी किया गया।

प्रारंभ में परिषद् की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर चर्चित विषय 'हमारा साहित्यिक दृष्टिकोण' तथा 'साहित्य परिषद् की 50 वर्ष की गौरव यात्रा' पर प्रकाश डालने वाली पुस्तिका प्रकाशित गयी।

समापन के अवसर पर आदि कवि वाल्मीकि से लेकर चैतन्य महाप्रभु तक आधारभूत साहित्य प्रदान करने वाले साहित्यकार ; भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से लेकर सुब्रमण्यम भारत तक आदर्श साहित्य प्रदान करने वाले साहित्यकार; परिषद् के समस्त अध्यक्ष तथा वर्तमान के कतिपय साहित्यकारों के परिचय तथा साहित्यिक अवदान की जानकारी देने वाली पुस्तक 'हमारे साहित्यकार' वितरित करने के लिये तैयार की गयी।

समापन कार्यक्रम : स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर निश्चित कार्यक्रम वर्ष भर करने के पश्चात् स्वर्ण जयन्ती वर्ष समापन समारोह का आयोजन 24–25 दिसम्बर 2016 को लखनऊ में किया गया। 24 दिसम्बर को राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक हुई। 25 दिसम्बर को देश भर से आमंत्रित कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में मुख्य समारोह संपन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि थे उत्तरप्रदेश के राज्यपाल मान्यवर राम नाईक और विशिष्ट अतिथि थे नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्रीमान बलदेव भाई शर्मा। औपचारिकताओं के पश्चात् महामंत्री श्री ऋषिकुमार मिश्र ने स्वर्ण जयन्ती वर्ष कार्यक्रमों का वृत्त प्रस्तुत किया।

साहित्य की श्रीवृद्धि में साहित्यकारों के साथ–साथ प्रकाशक, मुद्रक, पुस्तकालय तथा साहित्यिक पत्रिकाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। इसलिये इन क्षेत्रों में अतुलनीय व उकृष्ट योगदान देने के लिये प्रभात प्रकाशन के संचालक प्रभातकुमार, गीताप्रेस गोरखपुर के संचालक श्री ईश्वरदास पटवारी, दीनदयाल उपाध्याय पुस्तकालय खाटू के संचालक प्रकाश बैताला व हैदराबाद से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका संकल्य के संपादक गोरखनाथ तिवारी को शाल, श्रीफल, स्मृतिचिन्ह भेंट कर अतिथियों ने सम्मानित किया।

आद्य साहित्यकारों से लेकर वर्तमान के साहित्यकारों का परिचय तथा उनके साहित्यिक अवदान की जानकारी देने वाली श्रीधर पराडकर रचित पुस्तक 'हमारे साहित्यकार' का लोकार्पण मंचस्थ अतिथियों ने किया।